

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES



ISSN 2277 – 9809 (online)

ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

जनजातीय युवाओं में कौशल विकास, स्वरोजगार और आर्थिक आत्मनिर्भरता: बैतूल जिले के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन

जगदीश उइंके

सहायक प्राध्यापक

डॉ. भीमराव अम्बेडकर शासकीय
महाविद्यालय आमला, जिला
बैतूल (म.प्र.)

शोध निदेशक

डॉ. सुनिता बाणकर

(समाजशास्त्र विभाग)

मानविकी एवं उदार

कला संकाय

रविन्द्रनाथ टैगोर

विश्वविद्यालय भोपाल (म.प्र.)

सारांश

जनजातीय युवाओं में कौशल विकास स्वरोजगार आर्थिक सशक्तिकरण देश के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण है। मध्यप्रदेश का जिला बैतूल जनजातीय बहुल क्षेत्र होने के कारण इस दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। शिक्षा तकनीकी विकास वैश्वीकरण के कारण रोजगार की बदलती प्रकृति ने जनजातीय युवाओं की अपेक्षाओं को व्यापक किया है। ग्रामीण जनजातीय क्षेत्रों में रोजगार के परम्परागत सीमित अवसर पूँजी की कमी तकनीकी कौशल की कमी बाजार तक पहुँच आदि महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं। ऐसी स्थिति में स्वरोजगार आर्थिक आत्म निर्भरता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

प्रस्तुत शोध मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के संदर्भ में जनजातीय युवाओं में कौशल विकास, स्वरोजगार व आर्थिक आत्मनिर्भरता का अध्ययन करना है। अध्ययन में शासन द्वारा जनजातीय युवाओं के लिए उपलब्ध कौशल विकास स्वरोजगार हेतु संचालित योजनाओं का विश्लेषण करना है। विशेष रूप से कौशल विकास उद्यमिता विकास केन्द्र, जिला उद्योग केन्द्र औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, कृषि विकास, पशुपालन आदि से संबंधित अध्ययन सम्मिलित है।

ग्रामीण जनजातीय युवाओं के लिए टूट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना, अनुसूचित जनजाति वित्त विकास निगम, मुख्यमंत्री अनुसूचित जाति जनजाति योजना, पवनपुत्र योजना, भगवान बिरसा मुंडा योजना आदि योजनाओं के माध्यम से अनुदान सहायता प्रदान की जा रही है। निष्कर्ष: जनजातीय युवाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता केवल अनुदान सुनिश्चित करने से नहीं की जा सकती है। इसके लिए कौशल बाजार की समझ,

तकनीकी ज्ञान, संस्थागत मार्गदर्शन एवं स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करना आवश्यक है। बैतूल जिले में कृषि, हस्तशिल्प, वनोपज, खाद्य प्रसंस्करण सेवा आधारित युद्धम जनजातीय युवाओं के लिए रोजगार सृजन के महत्वपूर्ण माध्यम बन सकते हैं।

शब्दकुँजी :- रोजगार, स्वरोजगार, कौशल विकास केन्द्र, जनजातीय युवा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, उद्यमिता विकास, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, वनोपज, डिजिटल साक्षरता।

प्रस्तावना :-

भारत की जनजातीय आबादी में सामाजिक सांस्कृतिक, एवं आर्थिक विविधता है। जनजातीय समुदाय की आजीविका ऐतिहासिक रूप से कृषि, वनोपज, हस्तशिल्प एवं स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों पर ही निर्भर एवं सिमित है। वर्तमान समय में समाज का सशक्तिकरण एवं आर्थिक विकास उसके युवाओं की क्षमता, शिक्षा एवं कौशल पर निर्भर है। युवा सामाजिक एवं आर्थिक विकास प्रमुख वाहक है। जनजातीय युवाओं में मुख्यतः विकास का प्रश्न इसलिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इन क्षेत्रों में पर्याप्त प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता का बावजूद भी आधुनिक बाजार व्यवस्था तकनीकी ज्ञान वित्तीय संस्थानों, परिवहन व्यवस्था, डिजिटल नेटवर्क की पहुँच नहीं होने से ये बड़ी संख्या में असंगठित क्षेत्र, कृषि, मजदूरी या अस्थायी रोजगार पर ही निर्भर रहते हैं।

जनजातीय युवा अब आजीविका पर परम्परागत क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहना चाहते हैं वे अब शासकीय सेवाओं के साथ स्वरोजगार के क्षेत्रों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। बैतूल जिले का संदर्भ इस दृष्टि से महत्वपूर्ण जिला में महुआ, तेंदुपत्ता, हर्रा, बहेरा, आवला, शहद, औषधीय पौधे, अन्य लघु वनोपज के संग्रह, कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्पी जैसी गतिविधियाँ जनजातीय अर्थव्यवस्था की पारंपरिक शक्ति रही हैं। परंतु समस्या तब उत्पन्न होती है। जब इन गतिविधियों में मूल्यवर्धन वैज्ञानिक प्रसंस्कारण ब्राडिंग और आधुनिक विपणन का अभाव होता है। यही कौशल विकास की अवधारणा महत्वपूर्ण बनती है। कौशल विकास में तकनीकी ज्ञान समस्या-समाधान की क्षमता संचार कौशल, वित्तीय समझ, डिजिटल साक्षरता, बाजार की जानकारी, जोखिम उठाने की क्षमता के साथ जनजातीय युवाओं के ऐसा प्रशिक्षण प्राप्त हो, जिससे युवा अपने गाँव, पंचायत या निकटवर्ती बाजार में रोजगार और आय के अवसर मजबूत कर सकें। बैतूल जिले में अनुसूचित जनजाति की हिस्सेदारी लगभग 42 प्रतिशत के आसपास है। इतनी अधिक जनजातीय बहुमुख्य जिले में जनजातीय युवाओं को आधुनिक आर्थिक अवसरों से जोड़ने के कौशल विकास प्रदान करना केवल सामाजिक कल्याण नहीं अपितु जिले के समग्र आर्थिक विकास की आवश्यकता भी है।

अध्ययन की समस्या :-

जनजातियों की आर्थिक समस्या केवल बेरोजगारी नहीं है। कौशल विकास गुणवत्ता आय की स्थिरता पूँजी एवं बाजार की समझ महत्वपूर्ण कारक है। जनजातीय युवा अपनी कौशल तकनीक के माध्यम से स्वरोजगार स्थापित करता है तो उसका प्रभाव सीमित नहीं

रहता है। वर्तक इससे व्यक्ति परिवार समाज प्रतिष्ठा आदि पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। जनजातियों का एक निर्धारित भौगोलिक क्षेत्र होता है सामान्यतः वनों जंगलों एवं पहाड़ों में निवास करते हैं। इनकी विशिष्ट बोली होती है। आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होते हैं अपितु जो जीवोकोपार्जन करते हैं वह बाजार के लिए अतिरिक्त उत्पादन नहीं करते हैं तकनीक नवीन नहीं होकर वस्तुविनिमय भी होती है। परिवार में सयुक्त परिवार एवं संगठनात्मक स्वरूप होने से व्यक्ति की आर्थिक गतिविधि का मापन किया जाना संभव नहीं होता है। अतः केवल कौशल प्रशिक्षण जनजातीय युवाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए पर्याप्त है, अथवा कौशल के साथ वित्तीय सहायता बाजार, तकनीकी ज्ञान एवं संस्थान मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

अध्ययन के उद्देश्य :-

- बैतूल जिले के जनजातीय युवाओं में स्वरोजगार की संभावनाओं का अध्ययन करना।
- जनजातीय युवाओं में कौशल विकास, आर्थिक आत्मनिर्भरता का अध्ययन करना।
- जिले में उपलब्ध स्वरोजगार, कौशल विकास, शासन द्वारा संचालित योजनाओं का अध्ययन करना।
- जनजातीय युवाओं के समक्ष आने वाली वित्तीय, तकनीकी एवं बाजार संबंधी कठिनाइयों का अध्ययन करना।
- शासकीय योजनाओं की जानकारी स्थानीय बाजार एवं उनके महत्व संबंधों के समझना।
- जनजातीय युवाओं हेतु स्वरोजगार प्राप्ति हेतु कठिनाइयों के निराकरण हेतु सूझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रवृत्ति :-

यह शोध मुख्यतः वर्णात्मक, विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। इसमें मुख्यतः द्वितीय स्त्रोत का उपयोग किया गया है। प्राथमिक श्रोत में जिला प्रशासन द्वारा संचालित उपलब्ध जानकारी विभागीय सम्पर्क संस्थागत योजनाओं, सूचनाओं का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त उद्यमिता विकास, जनजातीय लाभार्थियों की जानकारी प्रस्तुत नहीं करता है, जिला प्रशासन द्वारा उपलब्ध जानकारी, संचालित योजनाओं आदि पर आधारित है।

बैतूल जिले की जनजातीय सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि एवं कौशल विकास की भूमिका :-

बैतूल जिला मध्यप्रदेश के प्रमुख जनजातीय बहुल जिलों में से एक है जहा मुख्य रूप से कोरकु एवं गोंड जनजातियों की मुख्य आबादी है। जनजातीय समुदाय की पारंपरिक, आर्थिक क्षमता उनके प्राकृतिक पर्यावरण और स्थानीय ज्ञान में निहित है। वनस्पतियों की पहचान, औषधीय पौधों का ज्ञान, खाद्य प्रसस्करण की पारंपरिक विधिया, बासकलाकृति, हस्तकलाकृति

अन्य प्राकृतिक सामग्री का उपयोग और स्थानीय कृषि पद्धतियाँ ऐसी पूँजी हैं। जिन्हें आधुनिक बाजार से जोड़कर आय के स्थायी साधनों में बदला जा सकता है। परंतु जनजातिय समुदायों की सामाजिक और आर्थिक जीवन व्यवस्था लंबे समय से केवल कृषि मजदूरी, वनोपज, पशुपालन, हस्तशिल्प तथा कौशल विकास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि जनता तीर्थ युवाओं के उनकी रुची अनुसार कौशल विकास का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाए तो वो अपने विशिष्ट पारंपरिक कौशल के साथ – साथ आधुनिक तकनीक से जुड़कर रोजगार एवं स्वरोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त करेंगे।

कौशल विकास केवल युवाओं में रोजगार सिमित करने तक ही सीमित नहीं अपितु इससे युवाओं में कार्यकुशलता, आत्मविश्वास, उद्यमिता और आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित होती है। प्रशिक्षण के दौरान यदि युवाओं को कार्यस्थल पर व्यावहारिक अनुभव बैंक, व्यवसाय शुरू करने की जानकारी, आधुनिक तकनीक का प्रयोग एवं बाजार से जुड़ने और क्रय – विक्रय संबंधी जानकारी मिले तो प्रशिक्षण उपरांत युवा स्वरोजगार की कल्पना के हकीकत में बदल सकता है। उदाहरणतः बांस से सुंदर डिजाइन वस्तुओं को आधुनिकता से जोड़कर बेहतर डिजाइन और बाजार उपलब्ध करा कर एक छोटे व्यवसाय में बदल जा सकता है। युवा महिलाएं भी कौशल विकास केन्द्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर उनकी पारंपरिक सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण हस्तशिल्प, सौंदर्य सेवा में जड़ी बेटियों का प्रयोग इत्यादि वो स्वयं सहायता समूह बनाकर लघु उद्योग में बदल कर बेहतर आय अर्जित कर सकती है।

वर्तमान समय में स्वरोजगार की महत्वता बढ़ गई हैं। आत्मनिर्भर भारत में भारत की जनजातीय का योगदान/भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। बैतूल जिले में कौशल विकास को प्रशिक्षण से रोजगार और प्रशिक्षण से स्वरोजगार तक ले जाना अत्यंत आवश्यक हो गया है। जिले में कार्यरत विभिन्न औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र कौशल विकास केन्द्र, महिला प्रशिक्षण संस्थाएँ, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थाओं तथा अन्य रोजगार परक प्रशिक्षण संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है।

अतः बैतूल जिले में कौशल विकास, रोजगार, स्वरोजगार और आर्थिक आत्मनिर्भरता में इन संस्थाओं के योजनाओं योगदान को समझने के लिए निम्नलिखित प्रमुख कौशल विकास एवं प्रशिक्षण संस्थाओं का अध्ययन किया गया है।

बैतूल जिले में कौशल विकास संस्थाओं की भूमिका :-

1. शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बैतूल (ITI Betul/ Chicholi/Shahpur/ Bhimpur)

बैतूल के ग्रामीण एवं जनजातीय युवाओं के लिए यह संस्था महत्वपूर्ण है। यहाँ से तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल प्राप्त कर युवा तकनीकी रोजगार की तरफ जा सकते हैं। इस प्रशिक्षण केन्द्र में विद्युत, फिटर, मशीनरी, यांत्रिकी, धातुकार्य, फिटिंग, औजार प्रशिक्षण, मरम्मत निर्माण, वेल्डिंग, उपकरण मरम्मत, मोटर पंप मरम्मत दो पहिया वाहन

सेवा तथा अन्य तकनीकी ट्रेडों से संबंधित प्रशिक्षण उपलब्ध होते हैं। प्रशिक्षण के दौरान व्यावहारिक अभ्यास प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त कर युवा स्वयं या विद्युत मरम्मत केन्द्र, फिटर, प्रशिक्षण कार्यशाला, युवक सेवा केन्द्र स्थापित कर सकता है।

2. शासकीय महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बैतूल (Women ITI Betul) :-

इस संस्थान में ग्रामीण एवं जनजातीय परिवारों की युवतियों को उनके लिए उपयुक्त तकनीकी एवं रोजगारपरक प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिलता है। पारंपरिक योग्यता कुशलता के साथ तकनीक को जोड़कर बेहतर स्वरोजगार के अवसर बना पाती है। महिला प्रशिक्षण केन्द्र में सिलाई, बुनाई के आधुनिक तरीके, मशीनों का प्रयोग, सेवा क्षेत्र, उपकरणों का अभ्यास सिखाया जाता है। युवतियाँ स्वयं का सामूहिक उत्पादन इकाई भी चला सकती हैं। व्यक्तिगत स्वरोजगार के स्थान पर यहाँ सामूहिक स्वरोजगार विकसित हो सकता है।

3. शासकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, बैतूल (सोनाघाटी)

यह संख्या औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं से एक स्तर आगे तकनीकी शिक्षा एवं डिप्लोमा स्तर की दक्षता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जनजातीय युवा एवं ग्रामीण विद्यार्थी यहाँ से तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर केवल श्रमिक नहीं बल्कि तकनीकी पॉलिटेक्निक स्तर पर इंजीनियरिंग एवं तकनीकी क्षेत्रों में डिप्लोमा आधारित शिक्षा दी जाती है। तकनीकी ज्ञान प्राप्त युवा तकनीकी सेवा इकाई निर्माण संबंधी व्यवसाय, मरम्मत केन्द्र या छोटे तकनीकी उद्यम स्थापित कर सकता है।

4. प्रधानमंत्री कौशल केन्द्र बैतूल :-

यह संस्था अल्पावधि रोजगारपरक प्रशिक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है वर्तमान में बैतूल प्रधानमंत्री कौशल केन्द्र से मोबाईल फोन, हार्डवेयर मरम्मत, तकनीकी शिक्षण तथा दोपहिया वाहन सेवा तकनीशियन जैसे प्रशिक्षण हुडें हैं। इस केन्द्र की यह विशेषता यह है कि इनके लिए बहुत बड़े उद्योग की आवश्यकता नहीं होती। प्रशिक्षित युवा अपने गाँव या कस्बे में ही सेवा उपलब्ध कर सकता है। मोबाईल मरम्मत/सहायक सामग्री की दुकान, वाहन सेवा केन्द्र, दोपहिया वाहन सेवा केन्द्र, घर-घर मरम्मत सेवा कर सकता है।

5. ग्रामीण रोजगार प्रशिक्षण संस्थान :-

ग्रामीण रोजगार प्रशिक्षण संस्थान बैंको, केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के सहयोग से संचालित व्यवस्था है। और इसका उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को उद्यमिता आधारित कौशल प्रदान करना है।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थानों में स्थानीय मांग के अनुसार कृषि एवं सहायक गतिविधियाँ, डेयरी, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, सिलाई, खाद्य उत्पाद, दोपहिया मरम्मत, मोबाईल मरम्मत, विद्युत उपकरण मरम्मत, सौंदर्य सेवा फोटोग्राफी आदि

जैसे प्रशिक्षण चलाए जा सकते हैं। इस संस्था क सबसे बड़ी विशेषता में बैंक _ण से जोड़ने तथा उद्यम शुरू करने में सहायता का प्रावधान है।

मशरूम प्रशिक्षण :- छोटा मशरूम उत्पादन – केन्द्र स्थानीय बाजार होटल/दुकान को ब्रिक्रि – आय

मोबाईल प्रशिक्षण :- मरम्मत केन्द्र स्थापित – मोबाईल सहायक सामग्री – डिजिटल भुगतान – नियमित आय का साधन।

यदि कारण है कि ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान को कौशल से सीधे उद्यमिता तक पहुँचाने वाली संस्था माना जाता है।

6. ग्रामीण युवाओं के लिए ग्रामीण कौशल योजना :-

ग्रामीण कौशल योजना का उद्देश्य ग्रामीण गरीब युवाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण से जोड़ना इस योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण केन्द्र में सीखे कौशल को वास्तविक कार्यस्थल पर प्रयोग करने पर बल दिया गया है। केवल प्रमाण – पत्र प्राप्त करने से ज्यादा असरदार वास्तविक क्षेत्र में प्राप्त प्रशिक्षण के करके देखना है।

7. समर्थ योजना (योजना के अंतर्गत कौशल प्रशिक्षण केन्द्र) :-

कपडा मंत्रालय की समर्थ योजना के अंतर्गत बैतूल जिले में ग्रामीण एवं जनजातीय युवाओं को प्रशिक्षित करने हेतु कई प्रशिक्षण केन्द्र संचालित है। इनमें एचकॉन कौशल केन्द्र बडोरा, एच कान कान कौशल केन्द्र आठनेर, एच कान्सेट्टस एजुकार्य के फाइबर कौशल केन्द्र, माँ ताप्ती कौशल केन्द्र उडान कौशल अकादमी आठनेर और विनायक कौशल केन्द्र आदि शामिल है। (21 अगस्त 2026 तक जिले के इस कार्यक्रम में 1106 प्रशिक्षण 1096 और 972 वेजनभोगी परिणाम दर्ज थे।

बैतूल में समर्थ योजना के अंतर्गत बॉस की टोकरी बनाने वाले कारीगर के कई प्रशिक्षण दर्ज है बॉस की केवल पारंपरिक टोकनी बनाकर स्थानीय बाजार में बेचने में आय सिमित होती है। परंतु उसे कौशल से सजावटी वस्तुओं टोकरी,लैम्प,फर्नीचर,उपहार सामग्री और घरेलू उपयोग की वस्तुएँ तैयार करके आमदनी अत्याधिक बढ़ाई जा सकती है।

बैतूल के लिए कौशल विकास मॉडल :-

जनजातीय युवा :- रुचि एवं क्षमता की पहचान – स्थानीय रोजगार की आवश्यकता का अध्ययन – कौशल प्रशिक्षण – व्यवहारिक प्रशिक्षण एवं अप्रेंटिसशिप – प्रमाण –पत्र एवं रोजगार मार्गदर्शन – नौकरी अथवा रोजगार चयन – बैंक _ण एवं वित्तीय सहायता – बाजार से जुड़ाव – नियमित आय – आर्थिक आत्मनिर्भरता ।

प्रशिक्षण से आय तक की पूरी प्रक्रिया को निम्नक्रम में विकसित कर स्वरोजगार हेतु ज्यादा प्रभावशाली तंत्र स्थापित किया जा सकता है।

कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्रों स्थापित होने के बावजूद जनजातीय युवाओं के सामने प्रमुख समस्याएँ उत्पन्न होती हैं यद्यपि बैतूल जिले में विभिन्न शासकीय एवं कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं फिर भी प्रत्येक युवाओं को स्थायी रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हो ही जाए ऐसा आवश्यक नहीं है। कई बार प्रशिक्षण युवाओं को करवाया जाता है। उसकी मांग स्थानीय बाजार में पर्याप्त नहीं होती है। प्रमाण पत्र प्राप्त कर लेना रोजगार की गारंटी नहीं है। इसलिए आने वाले समय में प्रशिक्षण संस्थाओं को स्थानीय उद्योगों और नियोक्ताओं के साथ मजबूत संबंध स्थापित कर बाजार की मांग की जानकारी जुटाना आवश्यक होगा। प्रशिक्षण के दौरान अंतिम कार्यस्थल प्रशिक्षण एवं व्यावहारिक अनुभव कार्य शाला या केन्द्र में सिखे गए प्रशिक्षण से बिल्कुल अलग प्रतीत होता है। कार्यस्थल प्रशिक्षण के लिए अधिक अवसर प्रदान किए जाने पर जोर देना अच्छा विकल्प है।

प्रशिक्षण उत्परांत युवा अपंग लघु उद्योग स्थापित करने के लिए धन की कमी से जुजते हैं मशीन, उपकरण, दुकान, कच्चा माल इत्यादि की खरीद के लिए पर्याप्त पूंजी बड़ी समस्या के रूप में सामने आती है। कौशल विकास केन्द्रों के बैंक ँण एवं सरकारी वित्तीय योजनाओं से जुड़ना स्वरोजगार हेतु कारगर साबित होगा।

किमत निर्धारण बाजार तक पहुंच, ग्राहक की पसंद, डिजिटल माध्यम से बिक्री का ज्ञान अर्जित करना आवश्यक होता है। स्थानीय स्तर पर रोजगार स्वरोजगार हेतु पर्याप्त प्रोत्साहन न मिलने पर जनजातीय युवा स्वरोजगार छोड़ रोजगार की तलाश में पलायन कर शहरों की तरफ जाकर स्वयं के स्तर से कम क्षमता एवं आय वाला रोजगार ढुंढते हैं परिणामस्वरूप बेरोजगारी एवं आर्थिक समस्या का सामना करते हैं।

कौशल विकास को अधिक प्रभावी बनाने के लिए स्थानीय आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण, प्रशिक्षण के साथ कार्यस्थल अनुभव प्रशिक्षण के बाद अनिवार्य मार्गदर्शन, बैंक और कौशल केन्द्रों का संबंध जनजातीय पारंपरिक कौशल का आधुनिकीकरण, महिलाओं के लिए अधिक सामूहिक उद्यम डिजिटल कौशल में डिजिटल भुगतान, मोबाईल का उपयोग, ऑनलाइन बाजार, सामाजिक माध्यमों द्वारा प्रचार और डिजिटल लेखा-जोखा प्रशिक्षण, रोजगार में एवं स्थानीय उद्योगों को प्रशिक्षण संस्थाओं से जोड़ने आधारित दृष्टिकोण को विशेष महत्व देना होगा।

बैतूल जिले में जनजातीय युवाओं के राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली योजनाएं

1. भगवान बिरसा मुड़ा स्वरोजगार योजना :- योजना का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जनजातीय युवाओं

को वित्तीय सहायता उपलब्ध करना है। जो अपना उद्योग, सेवा अथवा व्यवसाय प्रारंभ करना चाहते हैं। योजना के अंतर्गत विनिर्माण क्षेत्र में स्वरोजगार हेतु बैंक ँण तथा ब्याज संबंधी सहायता का प्रावधान है मार्च 2024 जन 904 पात्र हितग्राहियों को लगभग 33.70 करोड़ से

अधिक की वित्तीय सहायता वितरित की गई थी। यह योजना की प्रभावशीलता का प्रमुख संकेत यह है कि यह युवाओं के संभावित उद्यमों के रूप में विकसित करती है।

2. **टट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना :-** यह योजना आर्थिक रूप से कमजोर जनजातीय युवाओं के छोटे स्तर पर स्वरोजगार स्थापित करने हेतु सहायता प्रदान करने की योजना है योजना के अंतर्गत 10,000 से 1,00,000 तक बैंक ँण तथा ब्याज अनुदान का प्रावधान है। (यह योजना विशेष रूप से छोटे स्तर के व्यवसाय प्रारम्भ – जैसे – छोटी दुकान, सेवा ईकाई, मरम्मत कार्य, व्यवसाय)

जिला जनसंपर्क विभाग ने बैतूल जिले में सितंबर 2025 में आयोजित शिविरों में टट्या मामा आर्थिक कल्याण योजना के पाँच हितग्राहियों को स्वरोजगार योजनाओं का लाभ दिए जाने का उल्लेख किया है। उपलब्ध सरकारी आंकड़ों के अनुसार योजनाओं के अंतर्गत 905 पात्र हितग्राहियों को 5.06 करोड से अधिक की सहायता दी गई।

3. **मुख्यमंत्री अनुसूचित जनजाति विशेष परियोजना वित्त पोषण योजना :-** सामान्य स्वरोजगार योजना की निर्धारित श्रेणियों में सभी स्थानीय उद्यम किट नहीं हो पाते हैं इस विशेष परियोजना के माध्यम से जनजातीय क्षेत्रों में स्थानीय आवश्यकता प्राकृतिक संसाधन, सामुदायिक आजीविका, कौशल विकास, उत्पादन प्रसस्करण तथा रोजगार से जुड़ी परियोजनाओं को सहायता दी जा सकती है। 2024 तक इस योजना के अंतर्गत आठ विशेष परियोजनाओं के लिए 4.60 करोड से अधिक की वित्तीय सहायता/ ँण का उल्लेख है। बैतूल में इस योजना के अंतर्गत वन उपज प्रसस्करण, बांस एवं हस्तशिल्पी खाद्य प्रसस्करण, जनजातीय उत्पादों की पैकजिंग, सामुदायिक प्रशिक्षण केन्द्र जैसे स्थानीय उत्पादों के विपणन जैसी परियोजनाओं को विकसित किया जा सकता है। यह केवल व्यक्तिगत न होकर सामूहिक आर्थिक गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण है।

4. **प्रधानमंत्री जनजातीय विकास मिशन (PMJVM) :-** केन्द्र सरकार की यह योजना जनजातीय आजीविका और उद्यमिता के लिए महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समूहों के कृषि, वनोपज, गैर – कृषि उत्पाद और पारंपरिक उत्पादों को बाजार से जोड़ना मुख्य संवर्धन का तथा जनजातीय उद्यमिता को बढ़ावा देना है।

2026 में PMJVM के अंतर्गत 4,172 वनधन विकास केन्द्र स्वीकृत हुए हैं और लगभग 12.48 लाख जनजातीय लाभार्थियों को इससे जोड़ा गया है। यह बैतूल जिले के लिए अत्यंत प्रागसिंह है जिले में वन एवं कृषि आधारित उत्पादों को प्रसस्करण, पैकजिंग, ब्रांडिंग और विपणन से जोड़कर जनजातीय युवाओं के लिए स्थानीय Value chain आधारित रोजगार विकसित किया जा सकता है।

5. **PM Janman** – मध्यप्रदेश में स्थिति अनुसार इस योजना का अत्यंत महत्व है इसके अंतर्गत 18 जिलों में विशेष Camp लगाकर – आधार, आयुष्मान कार्ड, PM – Kisan

Credit Card, Jan Dhan Account और अन्य सरकारी सेवाओं से जोड़ने का कार्य किया गया है।

6. **NSTFDC** (राष्ट्रीय अनुसूचित जनजातीय वित्त एवं विकास निगम) :- यह केन्द्र सरकार की प्रमुख वित्तीय संस्था है। यह अनुसूचित जनजातीय युवाओं के पात्र व्यक्तियों को रियायती योजना उपलब्ध कराती है। इसके अंतर्गत टर्म लोन स्कीम, आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना, आदिवासी शिक्षा ंग योजना संचालित है 2026 तक NSTFDC द्वारा 16.80 लाख से अधिक लगभग 4.400 करोड की राशि में साथ फेसिलिटेड किए गए है।
7. **NSTFDCC** (आदिवासी महिला सशक्तिकरण योजना) :- महिलाओं के लघु परियोजना, स्व.सहायता समूह, खाद्य प्रसस्करण, हस्तशिल्प सिलाई,कडाई,बुनाई तथा छोटे व्यवसायों से जुड़ने पर इस प्रकार की वित्तीय सहायता दी जाती है 2026 तक लाभार्थियों की संख्या 56,944 दर्ज है।
8. **VCF- ST (Venture Capital Fund For Scheduled Tribes)** – बड़ी इकाइयों के विकसित करने हेतू वित्तीय सहायता का प्रावधान है हेमल फुड प्रोडक्ट प्राइवेट लिमिटेड को 3.41 करोड – हरले इंडिया प्राइवेट लिमिटेड को 5 करोड की राशि प्रदान कि गई है जनजातीय आर्थिक विकास नीति केवल छोटी इकाइयों तक नहीं बल्कि आधुनिक उद्यमिता और ग्रोथ ओरियंटेड बिजनेस विस्तार कर रही है।
इन राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा विशेष रूप से जनजातीय युवाओं के लिए चलाई जा रही योजनाओं के अलावा ग्रामीण युवकों के लिए चलाई जा रही योजआएं जैसे – प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, दीनदयाल उपध्याय ग्रामीण कौशल योजना, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम,प्रधानमंत्री मुड़ा योजना, प्रधानमंत्री संक्षम खाद्य उद्यम उन्नयन योजना,प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजन, प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान, लघु वनोपज के लिए न्यूनतम संमर्थन मूल्य एवं बाजार सहायता, जनजातीय विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय इत्यादि के माध्यम से लाभांवित हो रहे है।

विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों एवं योजनाओं का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि अब उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराने तक ही सीमित न रहते हुए कौशल प्रशिक्षण विभिन्न सहायता उद्यमिता, बाजार संपर्क, संसाधन का मूल्य संवर्धन, डिजिटल कौशल और सामाजिक आधारभूत संरचना के जोड़ते हुए आर्थिक आत्मनिर्भरता देना है।

निष्कर्ष :-

बैतूल जिले में अगली चुनौति केवल अधिक युवाओं को प्रशिक्षित करना नहीं अपितु प्रशिक्षित युवाओं के लिए स्थानीय स्तर पर पर्याप्त और स्थायी काम पैदा करना है। इसलिए

बैतूल के लिए कौशल विकास का बेहतर मॉडल प्रशिक्षण केन्द्र से आगे बढ़कर प्रशिक्षण से उद्यम और उद्यम से स्थानीय रोजगार। स्वरोजगार का होना चाहिए। यदि किसी क्षेत्र की प्रमुख आर्थिक गतिविधि को पहचान कर उसी क्षेत्र में बड़ा छोटा या सामूहिक उद्यम स्थापित किया जाए एवं उसमें स्थानीय ग्रामीण जनजातीय युवाओं में प्राथमिकता दी जाए वो एक प्रशिक्षित व्यक्ति के बनाय पुरा स्थानीय समुदाय आर्थिक गतिविधि से जुड़ जाएगा।

स्थानीय संसाधन की पहचान – उसी क्षेत्र का कौशल प्रशिक्षण – स्थानीय उद्योग – स्थानीय युवाओं की अप्रेंटिसशिप – रोजगार – आगे स्वरोजगार और उद्यमिता – आर्थिक आत्मनिर्भरता।

जहा संसाधन वही प्रशिक्षण वही रोजगार, स्वरोजगार की अवधारणा के अपनाकर बैतूल के जनजातीय युवाओं के कौशल को वास्तविक आर्थिक आत्मनिर्भरता में बदला जा सकता है।

000



EARN YOUR

MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

RESEARCH
GATEWAY

STOP PLAGIARISM



Arogyam Ayurveda
Holistic Healing through herbs



AROGYAM
ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

परिवर्तन

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



BLUE

Calms your Child's
Mind & Body

YELLOW

Promotes Concentration,
Stimulates the Memory

PINK

Evokes Empathy,
makes your Child Calm

RED

Excites and energizes
your Child's body

GREEN

Improves Reading speed
and Comprehension

www.parivartan4u.com



परिवर्तन

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS
AND ECONOMICS RESEARCH**

WWW.JLPER.COM

JLPE